International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(2): 51-53

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(2): 51-53
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 18-01-2019
Accepted: 22-02-2019

डॉ॰ कमलेश
सहायक प्रोफेसर, संस्कृत, जीवन चानन महिला महाविद्यालय, असन्ध करनाल, भारत।

Correspondence
डॉ॰ कमलेश
सहायक प्रोफेसर, संस्कृत, जीवन चानन महिला महाविद्यालय, असन्ध करनाल, भारत।

वैदिक युग की नारी व आधुनिक युग की नारी को इक्कीसवीं सदी में पुनः प्रतिष्ठित किया

डॉ॰ कमलेश

प्रस्तावना

वेदों में नारी की शिक्षा, शील, गुण, कर्त्तव्य और अधिकारों का विशद् वर्णन है। इस प्रकार का वर्णन संभवतः संसार के किसी भी धर्मग्रंथ में नहीं है। चारों वेदों में सैकड़ों नारी विषयक मंत्र दिए गए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में नारी का समाज में विशेष स्थान था। पुरुषों की भांति उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में बराबर का स्थान प्राप्त था। वैदिक साहित्य के अध्ययन ज्ञात होता है कि भारतवर्ष के समाज में नारियों की बहुत उत्तम व्यवस्था थी। स्त्रियाँ राजनीतिक, सामाजिक तथा प्रशासनात्मक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी।

ऋग्वेद में 24 और अथर्ववेद में 5 वैदिक विदुषियों का उल्लेख है। वेदों में नारी के गौरव का अनेक प्रकार से वर्णन है। नारी को ज्ञान–विज्ञान में निपुण होने के कारण ब्रह्मा बताया गया है। वेदों में कहा गया है–

1. गृहिणी ही गृह है – ऋग्वेद (3.55.46)
2. सुशील पत्नी गृह लक्ष्मी है – ऋग्वेद (10.3.5)
3. नारी कुल पालक है – अथर्ववेद (1.14.3)
4. नारी कुटुम्ब की पालक है – यजुर्वेद (14.2)
5. नारी परिवार की स्वामिनी है – ऋग्वेद (10.85.46)
6. नारी समाज में अग्रणी है – ऋग्वेद (10.159.2)
7. नारी अबला नहीं, सबला है – अथर्ववेद (20.16.9)
8. नारी सरस्वती के तुल्य प्रतिष्ठित हो – अथर्ववेद (14.2.15)
9. नारी, शील, राष्ट्रीय रक्षा तथा कर्त्तव्य की खान – अथर्ववेद (5.17.3)

ब्राह्मण ग्रंथों में नारी का गौरव

नारी को ब्राह्मण ग्रंथों में सावित्री कहा गया – जैमिनीय उप॰ ब्रा॰ (27.10.17)
पत्नी के बिना जीवन अधूरा है – शतपथ ब्राह्मण (5.2.1.11)
स्त्रियों का अपमान निंदनीय है – शतपथ ब्राह्मण (11.4.3.2)
पत्नी गृहलक्ष्मी है, साक्षात् श्री है – तैतिरीय ब्रा॰ (3.9.4.7)

जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का निवास होता है। जहाँ उनका आदर नहीं होता या इनका अपमान होता है, वहाँ सारे धर्म–कर्म निष्फल हो जाते हैं।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तजाफलाः क्रियाः। – मनुस्मृति (3.56)

जो अपने परिवार का कल्याण चाहते हैं, वे स्त्रियों का सदा सम्मान करें।
– मनुस्मृति (3.59)

वैदिक काल में स्त्रियों को वेद पढ़ने का पूरा अधिकार है। – यजुर्वेद (36.2)

अथर्ववेद 11.16.3.18 में उल्लेख है कि लड़कियाँ लड़कों के समान ब्रह्मचर्य को धारण करके शिक्षा ग्रहण करें।

वैदिक समाज में पुत्र के समान ही पुत्री को स्नेह–दुलार एवं आदर–सम्मान दिया जाता था।

– शतपथ ब्राह्मण (3/31/2)

वैदिक कन्याएँ कृषि कार्य में भी पिता के साथ सहयोग करती थी। अपाला को अपने पिता के खेतों में अच्छी फसल के लिए इन्द्र से याचना करते हुए चित्रित किया गया है।

– ऋग्वेद (8/81/5–13)

ऋग्वेद में कन्या को उच्च स्थान प्राप्त था, जिसके उदाहरण 'विसृनृता ददृशेदीयते घृतम्'– ऋग्वेद (1/135/7) अर्थात् जहाँ घृत बहता है, वहाँ हर्ष से प्रफुल्लित कुमारी देखी जाती है। वैदिक काल में कन्याओं को शुभ तथा विशेष शक्ति से युक्त माना जाता था। इसकी पुष्टि उजस् को दिब की पुत्री निर्देशित करने से होती है। घर की कन्याएँ सोम सवन में प्रमुख रूप से भाग लेती थी। ऋग्वेद (9/1/6) इस युग में धार्मिक कार्यों में भी बालिकाओं को बालकों के समान अवसर प्राप्त थे। कन्याओं को बालकों की ही भांति उपनयन संस्कार आदि होते थे वे संध्यावंदन का विधान नियमित रूप से करती थी। कौषीतकी ब्राह्मण में एक कुमारी गंधर्व गृहीत अग्निहोत्र में पारंगत बतायी गयी है। कौ॰ब्रा॰ (2/9) बालिकाएँ ब्रह्मचर्य का पालन करती हुई विविध विद्याओं में पारंगत होती थी। शिक्षा के साथ ही वे नाना प्रकार के गायन, वादन, नृत्य जैसी ललित कलाओं में भी प्रवीन होती थी। तैतिरीय संहिता एवं मैत्रायणी संहिता में कन्याओं की संगीत नृत्य में अभिरूचि का उल्लेख है। स्त्रियाँ सामगान करती थी। पितृगृह में कन्याओं को पाक्–शास्त्र की शिक्षा दी जाती थी। तै॰सं॰ (5/7)

पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत लेकर शिक्षा ग्रहण करती हुई युवा होने पर कन्या विवाह करती थी 'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्'

– अथर्व॰ (11/5/19)

पत्नी के रूप में भी स्त्री को उच्च स्थान प्राप्त था। विवाह संस्कार के समय कुलवधु को सम्बोधित करते हुए कहा जाता था।

'सम्राज्योधि श्वशुरेषु सम्राज्युत देवृषुः, ननान्दुः सम्राज्येधि सम्रज्युत श्वश्रुवाः।

– अथर्व॰ (14/14)

वैदिक काल में किसी भी रूप में स्त्री पुरुष से कम नहीं थी। वे पुरुष के समतुल्य समझी जाती थी। महाभारत के आदि पर्व 74/31 एवं वन पर्व 12/70 के अनुसार पत्नी सदा आदर की पात्र है, इसलिए उसे दारा कहा गया है। शतपथ ब्रा॰ 5/2/1/10 के अनुसार जो पत्नी है, वह आत्मा का आधा भाग है। तै॰ संहिता 6/1/45 में कहा गया है कि पति–पत्नी दाने की दो दालों की भांति है; जिसकी संयुक्त स्थिति ही दोनों को पूर्णतः प्रदान करती है। सभी शास्त्रकारों ने गृहिणी रहित गृह को अरण्य सदृश कहा गया है। महाभारत शांतिपर्व 144/61 के अनुसार भार्या सदृश न तो कोई बन्धु है और न ही धर्म संग्रह में अन्य कोई सहायक।

मातृरूप में भी वैदिक नारी को पूजनीय स्थान प्राप्त था। बन्धु में 'माता पृथिवी महीयम्' ऋग्वेद 1/64/33 तथा 'माता भूमि पुत्रेऽह पृथिव्या अथर्वः' 12/1/12 के द्वारा माता रूप में उसकी पग–पग पर स्तुति की गई है।

वैदिक काल में धार्मिक क्रियाओं में यज्ञ को सर्वाधिक महत्व दिया जाता था। पत्नी के अभाव में पति को यज्ञाधिकारी नहीं माना जाता था। ऋग्वेद व अथर्ववेद में नारी के अधिकार एवं कर्त्तव्यों की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि पत्नी के साथ बैठकर पति यज्ञार्थ स्रुवा लेकर यज्ञ करें। ऋग्वेद (1/83/3)

शतपथ ब्रा॰ में अकेले पति को स्वर्गलोक की भी आकांक्षा न करने को कहा गया है। तैतिरीय ब्रा॰ (3/7/5) में पति–पत्नी का संयोग सत्कार्य पूर्ति का कारक बताया गया है, जिसके कारण वे यज्ञ की धुरी में युक्त होते हैं। ब्रह्माण्ड पुराण में वर्णित है कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश सपत्नीक देवी की उपासना करते हैं।(4/40/93) वायु पुराण के अनुसार श्राद्ध के अवसर पर अग्नि का आवाहन सपत्नीक करना चाहिए। (15/70)

शतपथ ब्रा॰ (153/1/33) से स्पष्ट होता है कि उद्गाता का कार्य भी पत्नियाँ ही करती थी। यज्ञ सम्पादित करने वाली नारियों में विश्वारा का नाम सर्वप्रथम उल्लेखनीय है। वह प्रातः काल स्वयं यज्ञ प्रारम्भ कर देती थी। ऋ॰ 5/281। राम के युवराज पद अभिषेक के समय कौशल्या ने यज्ञ सम्पादित किया। रा॰ (2/20/15) बाली के सुग्रीव से युद्ध के लिए जाते समय उसकी पत्नी तारा भी यज्ञ कर रही थी। रा॰ (4/16/18) पाण्डव जननी माता कुंती भी अथर्ववेद की पंडिता थी। महा॰ (3/5/5/20)

वैदिक काल में अनेक महिलाएँ अध्यापिकाओं के रूप में शिक्षण देती थी। इन्हें उपाध्याया कहा जाता था। पतंजलि 3/822। पाणिनि 6/2/47 ने भी उपाध्याया एवं आचार्या पद वाली स्त्रियों पर प्रकाश डाला है। वाल्मीकि आश्रम में आत्रेयी लव और कुश के साथ विद्यार्जन करती थी। भरिवासु और देवराट् के साथ कामन्दकी ने गुरुकुल में अध्ययन करने का विवरण प्राचीन ग्रन्थों में प्राप्त होता है। वृहदारण्यक उपनिषद् से ज्ञात होता है कि उस समय नारियाँ दार्शनिक सभाओं में भाग लेती थीं। यथावसर वे सभाओं में भाषण आदि भी दिया करती थीं। अथर्व॰ 14/1/20

ब्रह्मवादिनी नारियाँ, आध्यात्मिक चिंतन एवं तपस्या प्रधान जीवन जीती थीं। उपनिषद् काल में मैत्रेयी एवं गार्गी इन स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है। वृहदारण्यक उपनिषद् 2/4 में याज्ञवल्क्य एवं मैत्रेयीका संवाद आता है, गार्गी के भरी सभा में याज्ञवल्क्य ऋषि को शास्त्रार्थ करने का वर्णन भी उपनिषदों में मिलता है। यजु॰ 14/4 में स्त्री को सोमपृष्ट कहा गया हैं। जिसका अर्थ है वेद–मंत्रों में जिज्ञासा रखने वाली। प्राचीन इतिहास में सुलभा का नाम प्रसिद्ध है। ब्रह्मवादिनी घोषा ने ऋ॰ के दशम् मण्डल के 39वें सर्ग एवं 40वें सूक्तों का साक्षात्कार किया था। पुरातन युग में नारी सुगृहिणी होने के साथ पति के सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। मनु ने स्पष्ट रूप से स्त्री को राज्य संचालन के योग्य माना है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते, सर्वास्त फलाः क्रियाः।।

यह विचार भारतीय संस्कृति का आधार स्तम्भ है, भारत में स्त्रियों को सदैव उच्च स्थान प्राप्त था। स्त्री समाज का दर्पण होती है, यदि किसी समाज की स्थिति को देखना है, तो वहाँ की नारी की अवस्था को देखना होगा, राष्ट्र की प्रतिष्ठा, गरिमा, उसकी समृद्धि पर नहीं अपितु उस राष्ट्र के सुसंस्कृत व चरित्रवान् नागरिकों से है और राष्ट्र को समाज को ये संस्कार देती है कि स्त्री जो एक माँ है, निर्मात्री है। हर महान् व्यक्तित्व के पीछे एक स्त्री है। आज ये प्रश्न हम सबको अपने आप करना है कि आज के समाज में स्त्री का क्या स्थान है। क्या हम आज की स्त्री में सीता माता का दर्शन करते हैं, जो केवल जब तक जिंदा रही अपने शील की रक्षा हेतु। जैसे नारी की दशा वैदिक युग में भी वह वर्तमान की भांति सारे कार्य करती थी। उसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए नारी ने आज के समय में भी चाँद पर पहुँच कर अपना नाम रोशन किया है। कल्पना चावला का नाम आज कोई भी नहीं भूला होगा। इसके साथ–साथ नारी देश के उच्च पदों पर आसीन है। हमारे देश की प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति भी तो एक स्त्री है। शिक्षा, चिकित्सा, व्यवसाय, राजनीति सभी क्षेत्रों में नारी की भागीदारी है। जहाँ वैदिक युग में नारी के परिवार समाज में स्थान की दृष्टि से स्वर्णिम

काल ही देखते हैं, वहाँ वेद नारी के इतने गौरव तथा आत्म–सम्मान को वरीयता देता है, उसे इतना अधिकार दिलवाता है, उन्हीं अधिकारों को देखते हुए आज की नारी अपने आप को वैदिक युग की नारी की भांति सत्य मार्ग पर प्रेरणा देती हुई उच्चतम उपाधि प्राप्त कर रही हैं, जहाँ कुछ समय के बीच में नारी की अपनी गरिमा कुछ भूमिका की। लेकिन नारी ने अपनी शक्ति से आज आधुनिक युग का तकाजा है कि स्त्री अपने खोए हुए गरिमापूर्ण रूप को फिर से प्राप्त कर लेगी और समय के अंतराल पर वह अपना वर्चस्व सभी क्षेत्रों में दिखा रही है। इसी उद्देश्य को देखते हुए वस्तुतः इक्कीसवीं सदी महिला सदी है। वर्ष 2001 महिला सशक्तिकरण वर्ष के रूप में मनाया गया, इसमें महिलाओं की क्षमताओं और कौशल का विकास करके उन्हें अधिक सशक्त बनाने तथा समग्र समाज को महिलाओं की स्थिति और भूमिका के सम्बन्ध में जागरूक बनाने के प्रयास किए गये। वर्ष 2001 में प्रथम बार राष्ट्रीय महिला उत्थान नीति बनाई गई जिससे देश में महिलाओं के लिए विभिन्न क्षेत्रों में उत्थान और समुचित विकास की आधारभूत विशेषताएँ निर्धारित किया जाना संभव हो सके। आज देखने में आया है कि महिलाओं ने स्वयं के अनुभव के आधार पर अपनी मेहनत और आत्मविश्वास के आधार पर अपने वर्चस्व को वैदिक काल की नारियों के समान सशक्त बनाया है। आज भारतीय सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान के अनेक कार्यक्रम एवं योजनाओं का संचालन किया और वर्तमान में स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव आए हैं।

भारतीय नारियाँ संसार की अन्य किन्हीं भी नारियों की भांति अपनी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखती हैं। नारी विधाता की सर्वोत्तम और नायाब सृष्टि है। नारी के लिए यह कहा जाए कि यह विविधता में एकता है, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज की नारी भूतकाल से शिक्षा प्राप्त कर वर्तमान में अपना योगदान पूरी तन्मयता से दे रही है।

माँ के रूप में योगदान– वीर भगत सिंह, चन्द्रशेखर, विवेकानन्द जैसी विभूतियों का देशहित में अवतार माँ के स्वरूप की ही देन है।

पत्नी के रूप में योगदान– तुलसीदास जी के जीवन को आध्यात्मिक चेतना प्रदान करने में उनकी पत्नी रत्नावली का ही बुद्धि चातुर्य था, विद्योतमा ने कालिदास को संस्कृत का प्रकाण्ड महाकवि बनाया था।

गृहिणी के रूप में योगदान– भारतीय समाज में महिलायें परिवार की मुख्य धुरी होती है जो कि वर्ष 1930, 2008, 2014 में आई आर्थिक मंदी से सभी देश ग्रसित हुए, परन्तु भारत नहीं। क्योंकि भारतीय महिलाओं की बचत की प्रवृत्ति ने भारतीय अर्थव्यवस्था को बचाया। ऐसा उदाहरण 2016 को नोटबंदी के दौरान देखने को मिला।

संस्कृति संस्कार और परम्पराओं की संरक्षिका के रूप में– नारी वास्तव में संरक्षिका होती हैं। सम्पूर्ण विश्व में भारत को विश्वगुरू का दर्जा दिलाने में महिलाओं की भूमिका अहम् रही है।

सामाजिक शैक्षिक धार्मिक योगदान में– परिवार को समाज को राष्ट्र को सशक्त बनाने में नारी का हाथ रहा है, जहाँ देश को प्रथम शिक्षिका सावित्री बाई फुले मिली, वही वैदिक सभ्यता में मैत्रेयी गार्गी आदि महिला शिक्षिका 21वीं सदी की नारी मार्ग–निर्देशिका बनी।

स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं ने अपना अमूल्य योगदान देते हुए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, उनमें कैप्टन कामा, रानी लक्ष्मीबाई, सरोजनी नायडू, एनी बेसेन्ट आदि थी। आज की नारी उन्हीं से प्रेरणा लेकर सेना में सारे भारतीयों की रक्षा कर रही है।

वैज्ञानिक योगदान में आज भारत अछूता नहीं है, आज अनेक महिला रक्षा विशेषज्ञ डॉ॰ टेसी थॉमस कल्पना चावल और सुनीता विलियम आदि ने व खेल जगत् में भी सन्धु सानिया मिर्जा, गीता फोगाट, साक्षी मलिक व दीपा मलिक ने भारत का नाम रोशन किया।

राजनैतिक क्षेत्र में इंदिरा गांधी, प्रतिभा पाटिल, सुषमा स्वराज आदि ने अपना राष्ट्र विकास में योगदान सराहनीय है।

प्रशासनिक क्षेत्र में किरन बेदी, सीतारमन आदि ने राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

साहित्यिक क्षेत्र में महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, मीराबाई का नाम चेतना और राष्ट्र के निर्माण के स्तर मुखरित होते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि जहाँ वैदिक युग में नारी राष्ट्र का उत्थान करती आ रही है। उन्हीं से प्रेरणा लेकर 21वीं शताब्दी की नारी ने अपने कर्त्तव्य, कर्मठता और सृजनशीलता के माध्यम से राष्ट्र का निर्माण और विकास किया है। आज नारी पुरुषों के समान सुशिक्षित, सक्षम, सफल है, चाहे कोई भी क्षेत्र हो अपनी योग्यता से परिवार, समाज, राष्ट्र को संभालते हुए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विजय पताका लहराते हुए विश्व को एकता के सूत्र में बांधने का योगदान दिया हैं। यही कारण है कि वह सृजना, अन्नपूर्णा देवी युग–द्रष्टा और युग सृष्टा होने के साथ ही स्वयं सिद्धा भी है।

निष्कर्ष

किसी भी समाज एवं राष्ट्र की स्थिति को वहाँ की नारियों की दशा को देखकर आंका जा सकता है। पुरातन काल के गौरवमयी सतयुगी समाज का श्रेय नारियों की उच्च स्थिति को दिया जा सकता हैं। वैदिक ग्रंथों के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि तब समाज में स्वतंत्रता एवं समानता की भावना ओतप्रोत थी, नारियों को हर क्षेत्र में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती थी, गृहकार्यों से लेकर कृषि प्रशासन एवं यज्ञ कर्म से लेकर अध्यात्म साधना तक वे कोई भी क्षेत्र उनके विशिष्ट व्यक्तित्व, प्रतिभा एवं कौशल की छाप से अछूते नहीं थे। वे अपनी बहु–आयामी उपलब्धियों के आधार पर अपनी जाति के अंदर संजीवनी शक्ति का संचार करती थी और अपने समाज व राष्ट्र को सशक्त एवं ऊँचा उठाने में अपना अमूल्य योगदान देती थी। वैदिक वाङ्ंग्य हो या वर्तमान समय नारी कहीं पुत्री तो कहीं भगिनी, पत्नी, माता, के रूप में उसकी भूमिका एवं योगदान उल्लेखनीय है। आज वर्तमान समय में नारी ने वैदिक नारी से प्रेरणा प्राप्त कर संस्कृति पुनरुत्थान की बेला में पुनः उसी स्वर्णिम इतिहास दोहराया जाना है। शान्तिकुंज के तत्वाधान में चल रहे विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभिमान के अंतर्गत महिलाएँ गायत्री साधना एवं चर कर रही है। अश्वमेघ जैसे विराट् यज्ञ में वे ब्रह्मवादिनी की भूमिका निभा चुकी है, धीरे–धीरे वे समाज और जीवन के हर क्षेत्र में पदार्पण कर रही है। नारी जागृति की यह लहर वर्तमान में 21वीं सदी में नारी सदी के या नारी सशक्तिकरण के आदर्श को सार्थक साकार करके ही दम लेगी। ऐसा विश्वास किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ

1. वैदिक साहित्य का इतिहास, प्रो0 पारसनाथ द्विवेदी चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी संस्करण 2017
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ0 उमाशंकर शर्मा ऋषि चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी संस्करण 2017
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास (वैदिक खण्ड) डॉ0 प्रीति प्रभा गोयल राजस्थानी ग्रन्थागार, राजस्थान संस्करण 2016
4. वेदकालीन समाज (डॉ0 शिवदत्तरानी) चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
5. वैदिक साहित्य और संस्कृति (बलदेव उपाध्याय) शारदा संस्थान, वाराणसी